COLLEGE NAME - SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

AT- KRINDIH, KUMAHU, SASARAM (ROHTAS)

CLASS - B. Ed. 1st Year

PAPER - C. 5

UNIT - 2

DATE - 12-06-2020

Scanned with CamScanner

D.El.Ed / B.Ed. 1st Year
C-5

CURRICULUM

* Meaning * Aims * Principles * Types
* Definition * Needs * Basis

(अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य, आवश्यकता, सिद्धांत, आधार, प्रकार)

Introduction:- शिक्षा जैसी बहुमूल्य वस्तु का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगिण एवं चौतरफा विकास करना है। जिसके लिए व्यक्ति अथवा बालको/छात्रों को विभिन्न विषयों की जानकारी होना आवश्यक है। तो दुसरी ओर समाज का आर्थिक, सामाजिक, एवं अन्य सभी विकास समाज के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर निर्भर करता है।

पाठ्यक्रम शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक क्रियाओं का सुसज्जित एवं व्यवस्थित प्रारूप है, जो शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति एवं बालक की क्षमता तथा समाज की आवश्यकताओं एवं समस्याओं को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। जो न केवल बालक का सर्वांगिण विकास में सहायता प्रदान करता है, बल्कि शैक्षणिक क्रियाओं के संचालन में विद्यालय प्रशासन की सहयता में अपना योगदान देता है।

* **Meaning:-** सामान्य अर्थ में कहा जाए तो, पाठ्यक्रम विषय वस्तुओं तथा सहगामी क्रियाओं का ऐसा योग है, जो हर एक शैक्षणिक वर्ष के लिए निर्धारित किया जाता है।

हिन्दी में इसे पाठ्यक्रम की संज्ञा दी जाती है, जिसका संन्धि विच्छेद पाठ्य + क्रम है, जिसका मतलब है, विषय वस्तुओं को क्रमबद्ध — (Arrangement) से प्रदान किया जाना।

अंग्रीजी में इसे "CURRICULUM" की संज्ञा दी जाती है, "CURRICULUM" शब्द उत्पति लैटिना भाषा के "CURRERE" शब्द से हुई है। जिसका मतलब RACE COURSE [दौड का मैदान] अर्थात् जो एक निश्चित अवधि में कोई काम कहाँ से प्रारंभ होकर कहां समाप्त होगी।

उपरोक्त विवेचना से इसका अर्थ स्पष्ट है की विषय-वस्तुओं शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक क्रियाओं को निश्चित अवधि के लिए निर्धारित करना, जिससे शिक्षा प्रक्रिया को सुचारू रुप से चलाया जा सके।

* **Definition:-** पाठ्यक्रम को बहोत सारे महान शिक्षा शास्त्रीयों एवं मनोवैज्ञानिकों ने अपने अनुसार परिभाषित किया है। कुछ परिभाषाए निम्नलिखित हैं।

→ According to Moonro (मुनरो के अनुसार):- "पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव निहित हैं, जिन को विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लाया जाता है।"

["Curriculum embodies all the experiences which are utilized by the school to attain the aims of Education". — Moonro]

→ फ्रोबेल के अनुसार:- "पाठ्यक्रम को मानव जाति के संपूर्ण ज्ञान और अनुभव का सार समझा जाना चाहिए"

→ कनिंघम के अनुसार:- "पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक साधन है जिससे वह अपनी चित्रशाला (विद्यालय) में अपनी सामग्री (छात्र) को अपने आदर्शों (उद्देश्य) के अनुसार ढालता है।"

P.T.O

Scanned with CamScanner

* Aims (उद्देश्य) :-

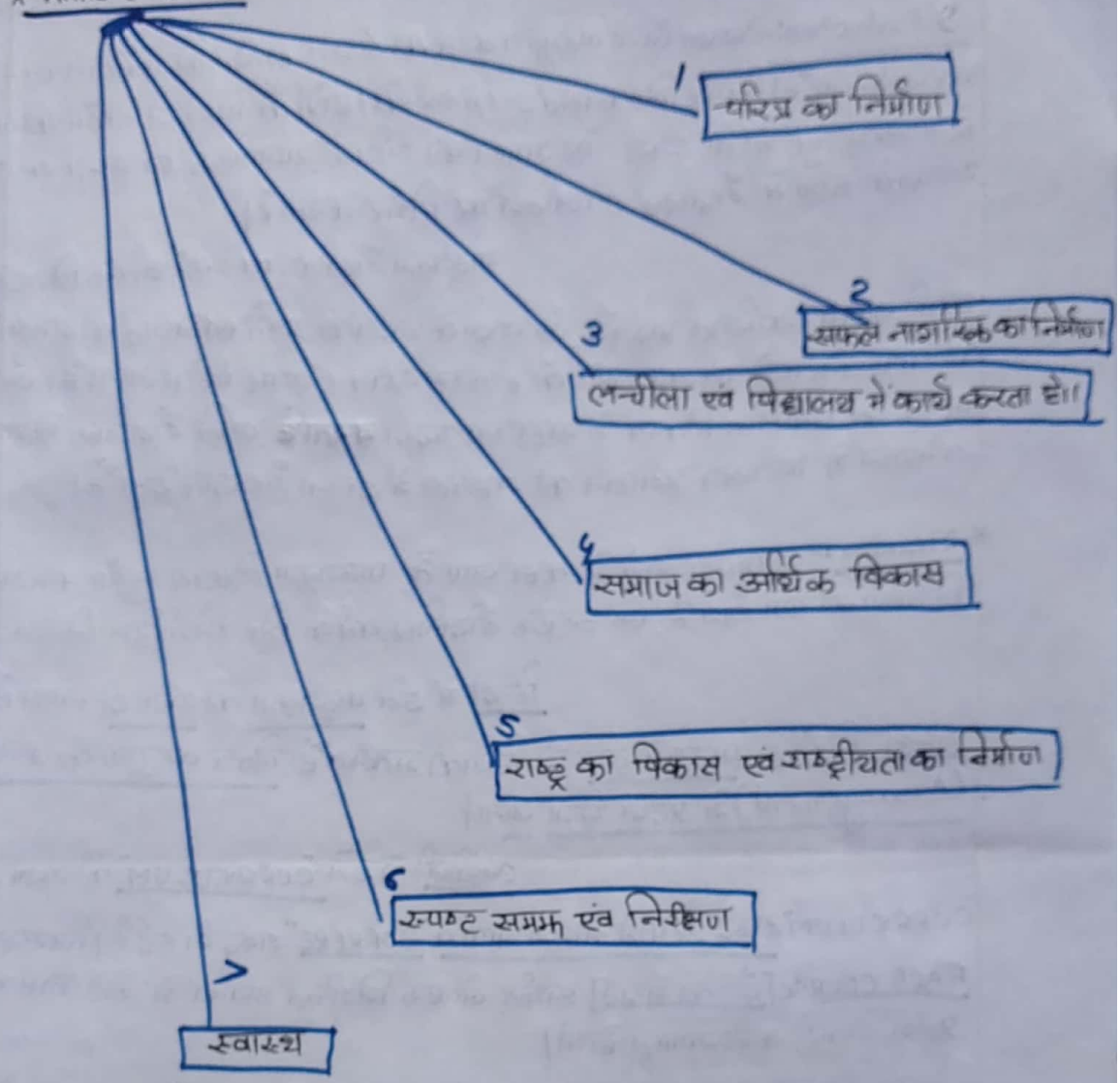

1. **चरित्र का निर्माण** :- पाठ्यक्रम का अहम उद्देश्य है बालक का चरित्र अच्छा बने जिससे समाज के सभी व्यक्ति को अच्छा संदेश मिले।

2. **सफल नागरिक निर्माण** :- बच्चा समाज से ही विद्यालय शिक्षा प्राप्त करने जाता है जहाँ पर पाठ्यक्रम के माध्यम से उसे शिक्षा दी जाती है, जहाँ उसे यह बताया जाता है की वह जिस समाज में रहता वहां उसके भी कुछ कर्तव्य होते है, जो समाज के लोगों के प्रतिभाव सहयता आदि की भावना का विकास होता है जिससे बाल समाज में सफल नागरिक बनकर उभरता है

3. **लचीला एवं विद्यालय में कार्य करता हो।** - पाठ्यक्रम को आवश्यकता के अनुसार कुछ बदलाव किया जाता है जिसके लिए उसका लचीला होना अति आवश्यक होता है कुछ पाठ वस्तु को समय के अनुसार बाद में पढ़ाया जाने के लिए छोड़ दिया जाता है

पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए की उसका उपयोग हर दिन विद्यालय में किया जाना चाहिए, ऐसा नहीं की कोई भी शिक्षक कभी भी कुछ भी पढ़ाए पाठ्यक्रम में हर विषय का एक समय तय रहता है)

4. **समाज का आर्थिक विकास** :- जब बालक पढ़ लिखकर बड़ा हो कर किसी नौकरी या व्यवसाय करता है तो उससे समाज एवं स्वयं बालक का भी आर्थिक विकास होता है जिससे समाज की आवश्यकता एवं समस्या को दूर करने सहायता देती है

Scanned with CamScanner

5. राष्ट्र का विकास एवं राष्ट्रीयता :- बालक को पाठ्यक्रम के माध्यम से यह बताया जाता है कि वह जिस देश में रहता है उसके प्रति उसकी कुछ जिम्मेदारी, कर्तव्य है, उसे अपना योगदान राष्ट्र के विकास में देना होगा और एक सफल देश प्रेमी बनकर अपने देश की सेवा करे।

6. स्पष्ट चिंतन एवं निरीक्षण :- पाठ्यक्रम उस विषयों को सम्मिलित किया जाता है जिससे बालक के चिंतन, मनन, आदी की भावना जागृत हो, वह यह जान सके की क्या कार्य करना समाज व देश के लिए आवश्यक है, और क्या कार्य से देश व समाज की शांति भंग हो सकती है। इन सब बातों को बालक विद्यालय में पाठ्यक्रम के माध्यम से जान जाता है।

7. स्वस्थ :- पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे बालक के स्वस्थ को किसी प्रकार की हानि न हो, पाठ्यक्रम बालक की आयु, क्षमता के अनुसार होना चाहिए, ऐसा नहीं की चार वर्ष के बालक को 8 वर्ष की पाठ्यवस्तु दे दी जाए, यदी ऐसा होता है तो इसका प्रभाव बालक के स्वस्थ पर पड़ेगा। इसलिए पाठ्यक्रम बालक की क्षमता, आयु आदी को देखकर बनाया जाता है

⇒ *** Need (आवश्यकता) :- OR, Importance (महत्व) :-**

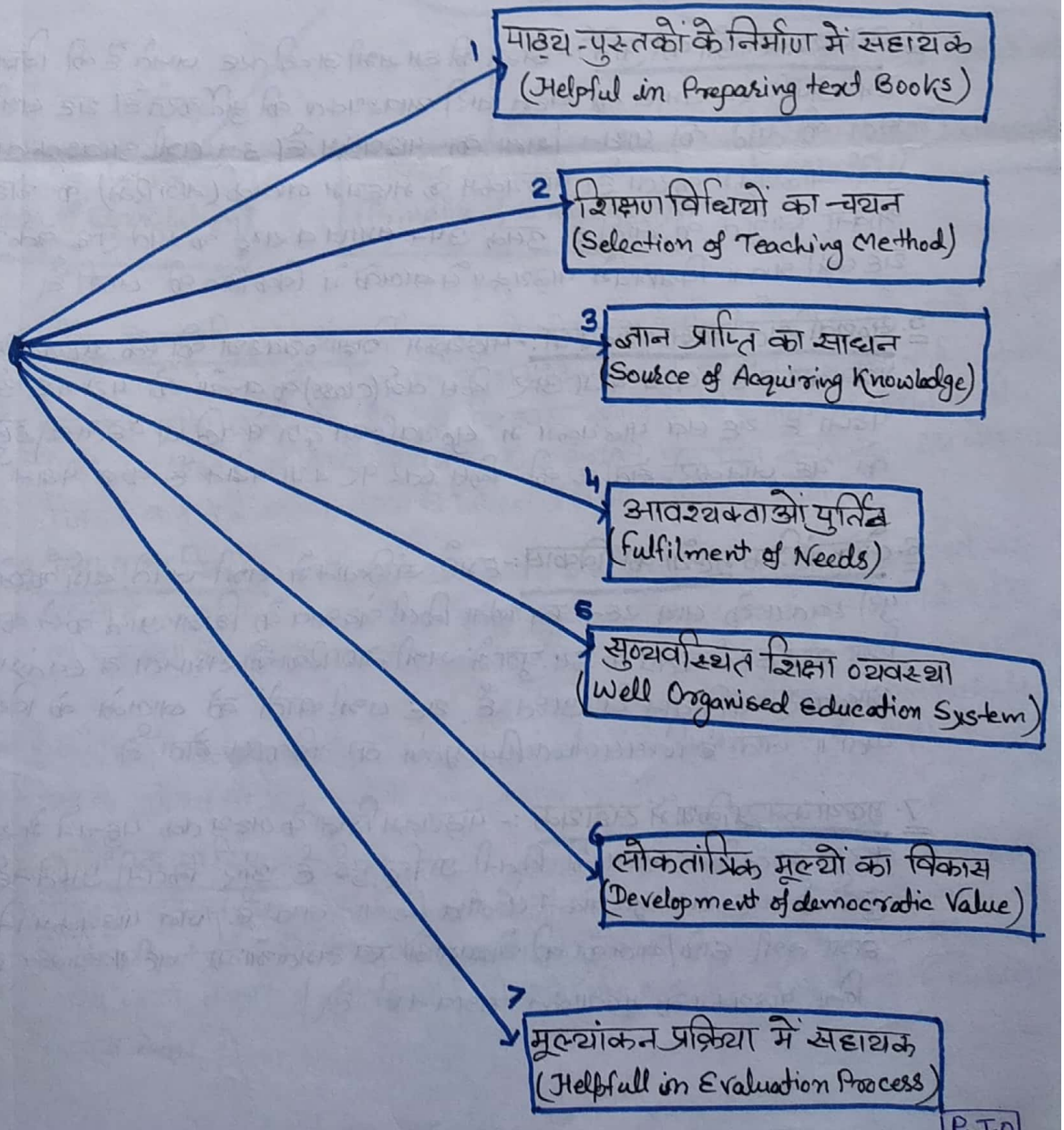

P.T.O

Scanned with CamScanner

पृ. 9

1. पाठ्य पुस्तकों के निर्माण में सहायक :- पाठ्यक्रम एक प्रकार का आधार है जिसके ऊपर पाठ्यपुस्तकों की रचना की जाती है। जिस प्रकार बिना आधार (पीलर) किसी मकान को खड़ा करना संभव नहीं है, उसी प्रकार बिना पाठ्यक्रम के पुस्तकों का निर्माण संभव नहीं। न ही शिक्षा को व्यवस्थित रूप दे पायेंगे। बिना पाठ्यक्रम के सामान्य पुस्तकें लिखी जा सकती हैं लेकिन पाठ्य पुस्तकें नहीं।

2. शिक्षण विधियों का चयन :- पाठ्यक्रम शिक्षक के लिए एक मार्गदर्शक (Guide) की तरह है। जो उसे विभिन्न शिक्षण विधियों के चुनाव में सहायता करता है। पाठ्यक्रम से ही शिक्षण विधि का निर्धारण होता है। जैसा पाठ्यक्रम होगा वैसा ही शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार के बिना मार्गदर्शक के कोई भी कार्य सफल नहीं होता उसी प्रकार शिक्षा जैसे बहुमूल्य वस्तु के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम एक मार्गदर्शक के रूप में है।

3. ज्ञान प्राप्ति का साधन :- किसी भी पाठ्यक्रम को ज्ञान की प्राप्ति के उद्देश्य से बनाया जाता है। ज्ञान प्राप्त करके बालक अपने अनुभव को बढ़ाता है जिससे वह समाज में सुविधापूर्वक जीवन बीता सके। हमारे आस पास बहुत सारे ऐसे वस्तु हैं जिनका ज्ञान हमें नहीं होता लेकिन इस ज्ञान को हम पाठ्यक्रम से जान पाते हैं।

4. आवश्यकताओं की पूर्ति :- जैसा की हम सभी अच्छी तरह जानते हैं की शिक्षा से ही हम अपनी एवं समाज की बहुत सारी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। यह सभी आवश्यकता की पूर्ति का साधन शिक्षा का पाठ्यक्रम है। इन सभी आवश्यकता की पूर्ति पाठ्यक्रम करता है। पाठ्यक्रम के माध्यम बालक (नागरिक) के अंदर ये भावना जागृत की जाती है उसके अपने समाज व राष्ट्र के प्रति कुछ कर्तव्य है यह सभी भावना विद्यालय में पाठ्यक्रम से बालकों में विकसित की जाती है।

5. सुव्यवस्थित शिक्षा व्यवस्था :- पाठ्यक्रम शिक्षा व्यवस्था को एक सुव्यवस्थित रूप प्रदान करता है, कब क्या और किस वर्ग (class) के बच्चों को पढ़ाना है और कितना पढ़ाना है यह सब पाठ्यक्रम में सुव्यवस्थित ढंग से लिखा रहता है। इससे शिक्षक को यह जानकारी होती है की किस स्तर पर क्या पढ़ाना है कब पढ़ाना है।

6. लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास :- हमारे संविधान में सभी जाति, धर्म के लोगों को पूरी स्वतंत्रता के साथ रहना एवं बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया गया है। लोकतंत्र के इस युग में सभी नागरिकों को समानता व स्वतंत्रता का अधिकार संविधान से प्राप्त है. यह सभी बातें को बालकों के विद्यालय में बताया जाता है जिससे लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास होता है।

7. मूल्यांकन प्रक्रिया में सहायक :- पाठ्यक्रम शिक्षा के लक्ष्य तक पहुँचने में सहायता करता है। लेकिन लक्ष्य की कितनी प्राप्ति हुई है और कितनी प्राप्ति नहीं नहीं हुई है यह सब मूल्यांकन से ज्ञात किया जाता है, जब पाठ्यक्रम निश्चित होगा तभी छात्रों/बालकों की योग्यताओं एवं क्षमताओं का सही मूल्यांकन हो पाता है बिना पाठ्यक्रम के मूल्यांकन संभव नहीं है।

Scanned with CamScanner

* Principles of Curriculum (पाठ्यक्रम के सिद्धांत) :-

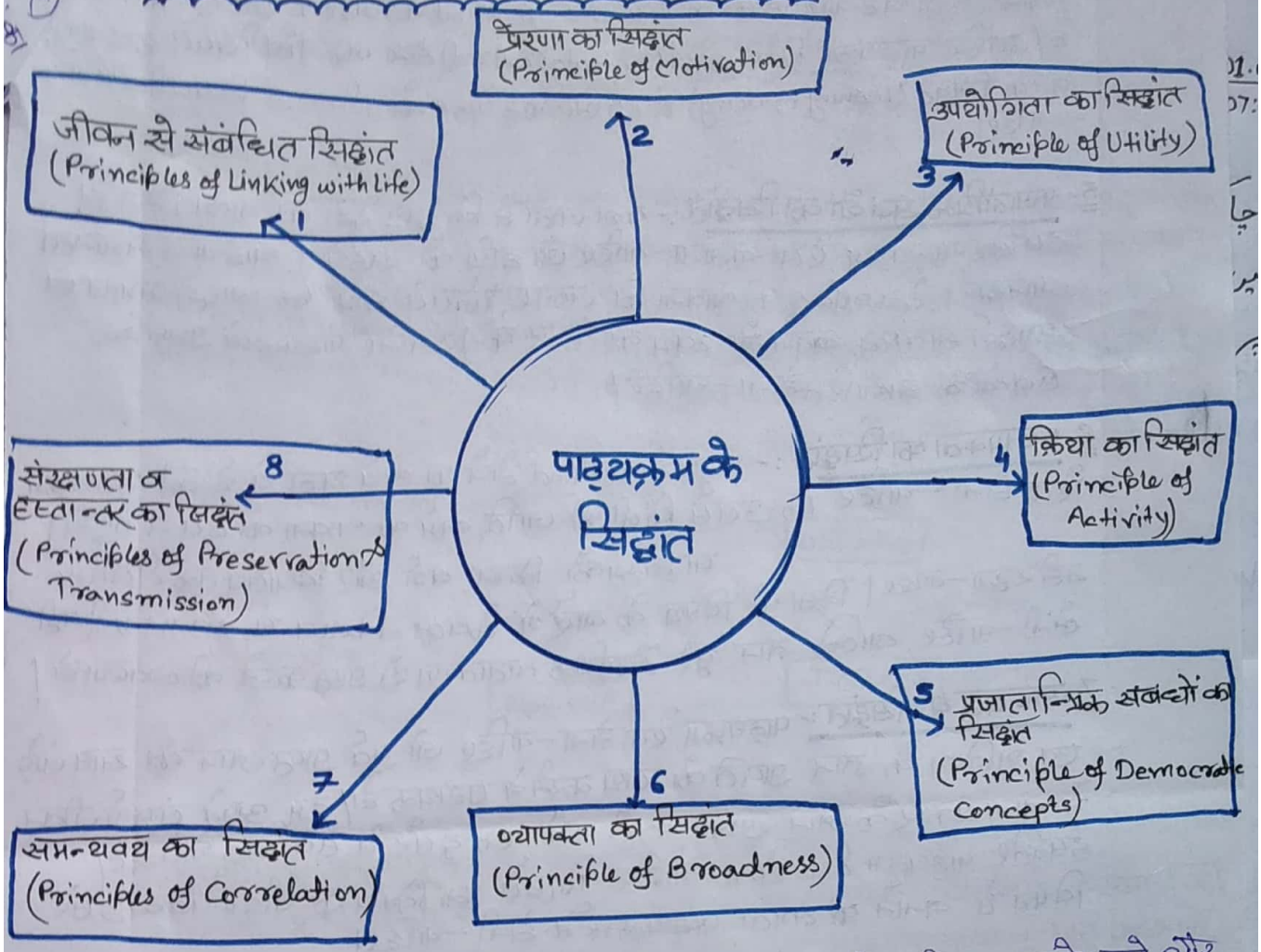

1. जीवन से संबंधित सिद्धांत :- जो काम हमारे जीवन से संबंधित होता उसको करने और उसके बारे में जानकारी लेने में हम अधिक उत्सुक होते हैं। जब छात्रों को कोई Subject के बारे में रुचि जगाने के लिए उसे दिलचस्प बनाने के लिए यह आवश्यक है की पाठ्यक्रम/ यह विषय उसके जीवन से संबंधित हो। पाठ्यक्रम बनाते समय इस बात पर जितना बल देंगे बालक उतना ही Interested होकर विषय को पढ़ेगा।

2. प्रेरणा का सिद्धांत :- पाठ्यक्रम उस समय तक छात्रों को प्रेरणा (Motivate) प्रदान नहीं कर सकता है, जब तक कि वह छात्रों की क्षमता, योगता, रुचि पर आधारित न हो। इस तरह का पाठ्यक्रम को मनोवैज्ञानिक होना आवश्यक है इसलिए पाठ्यक्रम ऐसा हो। जिससे बालक Motivate हो सके। यदि पाठ्यक्रम बालकों को Motivate (उत्साह/ अभिप्रेरणा) नहीं करता है, तो बालक शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल नहीं हो पायेंगे।

3. उपयोगिता का सिद्धांत :- पाठ्यक्रम बनाते समय उस विषय को जोड़ना चाहिए जो बालक के जीवन में वर्तमान तथा भविष्य में उपयोगी हो और जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि हो। बालक जब किसी Subject की उपयोगिता (Utility) जान जाते है तो उसके प्रति उनका रुचि व उत्साह स्वयं जाग जाता है। क्योंकि कोई भी ज्ञान यदि हमारे लिए उपयोगी नहीं है तो उसको जानना बेकार है

P.T.O

Scanned with CamScanner

4. क्रिया का सिद्धांत :- किसी भी काम को जब छात्र या कोई भी व्यक्ति स्वयं करके सीखता है तो वह काम हमेशा के लिए छात्र के Mind में हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाता है। इसलिए पाठ्यक्रम क्रिया प्रधान (Activity Centred) होना जरूरी है। जिससे छात्र खुद करके सीखते (Learning by doing) है इसलिए पाठ्यक्रम को पूरी तरह क्रियाशील बनाना चाहिए।

5. प्रजातांत्रिक संबंधों का सिद्धांत :- कहा जाता है कि छात्र देश का भविष्य होते है इसलिए पाठ्यक्रम ऐसा बनाना चाहिए जो छात्रों को सहयोग, भाईचारा, समानता ईमानदारी, देश भक्ति की भावना को जगाए, जिससे छात्र एक आदर्श समाज एवं आदर्श नागरिक बनने में स्वयं को तैयार करें। इसलिए पाठ्यक्रम में प्रजातांत्रिक संबंधों के आधारित होना चाहिए।

6. व्यापकता का सिद्धांत :- पाठ्यक्रम व्यापकत होने का अर्थ यहाँ ये है की पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए कि उससे किसी भी जाति, धर्म की भावना को ठेस न पहुँचे। पाठ्यक्रम को किताब, वर्ग और विद्यालय तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। किसी भी विषय के बारे में केवल किताब से ही जानकारी नहीं लेनी चाहिए. बल्कि ज्ञान पूरे शैक्षणिक वातावरण से प्राप्त करने की व्यवस्था हो।

7. समन्वय का सिद्धांत :- पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो पूर्व प्राप्त ज्ञान को साथ जोड़े एवं भविष्य के ज्ञान प्राप्ति को साथ करने में सहायक हो। हम अपने संपूर्ण जीवन में नाना प्रकार के ज्ञान प्राप्त करते जो एक दूसरे से संबंधित होते है इसलिए पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे एक विषय का सीधा संबंध दूसरे विषय से बनाने की क्षमता ~~पाठ्यक्रम के~~ होनी चाहिए।

8. संरक्षणता व हस्तान्तरण का सिद्धांत :- समाज को अपना अस्तित्व बनाए रखने के यह आवश्यक है कि वह अपनी परम्परा, संस्कृति को बनाए रखें। समाज शिक्षा, विद्यालय से यह आशा करता है की वह समाज की सभ्यता व संस्कृति बनाए रखेगी। अतः यह आवश्यक है कि विद्यालय शिक्षा के माध्यम से छात्रों को समाज की सभ्यता संस्कृति एवं गौरव की ज्ञान कराये। इस लिए पाठ्यक्रम निर्माण में समाज की संस्कृति सभ्यता का पाठ की पूरी व्यवस्था की जाए।

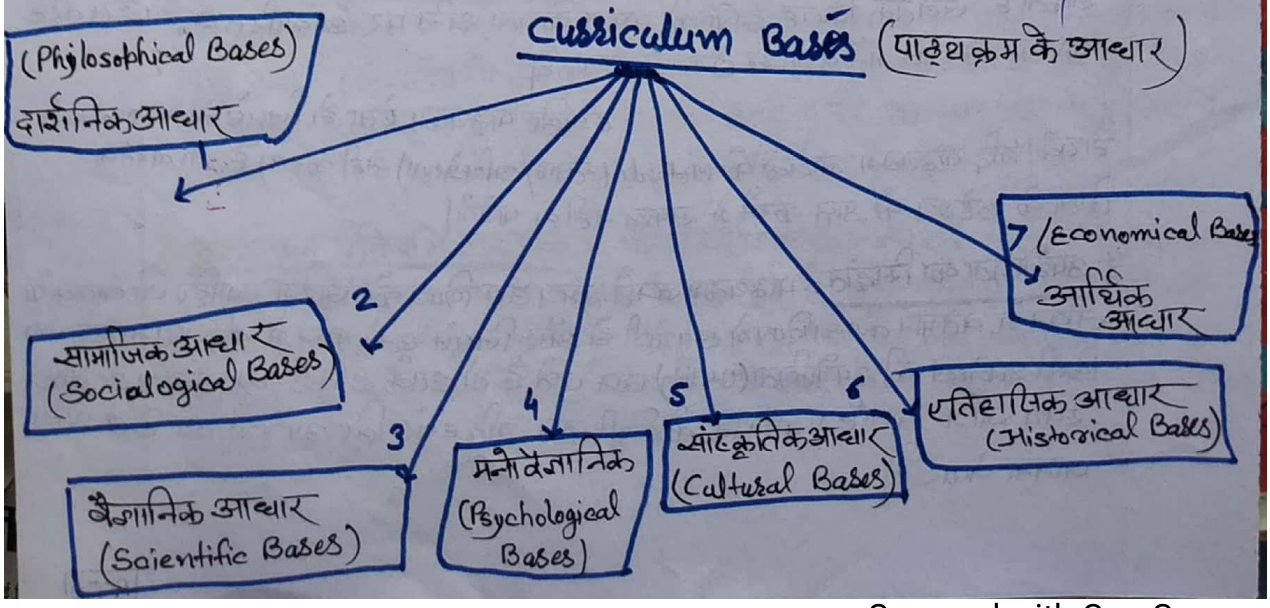

Scanned with CamScanner

Bases of Curriculum
[पाठ्यक्रम के आधार]:-

1. **दार्शनिक आधार** :- दार्शनिक आधार से तात्पर्य - पाठ्यक्रम शिक्षा के उद्देश्य पर आधारित होता है, शिक्षा के उद्देश्यों का आधार दर्शन होता है। इसलिए समाज के लोगों का जीवन-दर्शन, उनकी आर्थिक, सामाजिक विचारधाराएं पाठ्यक्रम का आधार है। हम जानते हैं की दर्शन का संबंध जीवन के लक्ष्यों से होता है। दर्शन शास्त्र मानव जीवन की आवश्यकता एवं समस्याओं को समाधान करता है। दर्शन के बिना जीवन को समझना कठिन होगा।

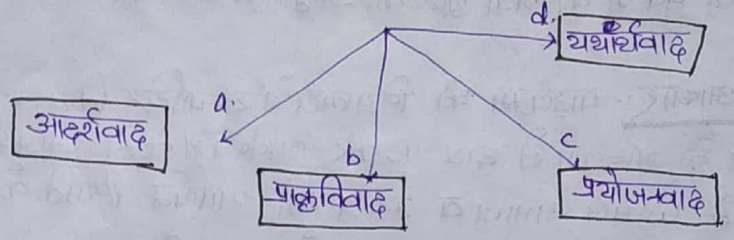

शिक्षा दर्शन के चार वादों ने शिक्षा की पाठ्यक्रम को अपनी विचारधारा के अनुसार प्रस्तावित किया है

2. **समाजिक आधार** :- पाठ्यक्रम को यह आधार में बनाते समय हमारा दायित्व होता है कि पाठ्यक्रम में उन समाजिक तत्वों का समावेश जिससे छात्र समाज की व्यवस्था, समस्या, आवश्यकता को जाने एवं उसका समाधान पाठ्यक्रम के माध्यम से किया जाए।
समाजिक आधार
इसलिए, पाठ्यक्रम में बालको यह बताया जाता है की - पर्यावरण सुरक्षा, मानवाधिकार, प्रत्येक नागरिक का समाजिक कर्तव्य क्या है आदि।

4. **मनोवैज्ञानिक आधार** :- मनोवैज्ञानिक आधार के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्धारण छात्रों की रुचि, आवश्यकता, क्षमता, योग्यता आदि के अनुसार होता है। मनोविज्ञान शिक्षा प्रक्रिया को लक्ष्यपूर्ण बनाता है। इससे निर्धारित जितने अंश को शिक्षार्थी आसानी से सीख लेता है। यह छात्र को विकास और चरित्र निर्माण में अपनी मुख्य भूमिका निभाता है। इसलिए मनोवैज्ञानिक आधार पर विशेष बल दिया जाता है

3. **वैज्ञानिक आधार** :- आज विज्ञान की चारो ओर प्रगति पुरे मानव समाज को लाभान्वित किया है। पाठ्यक्रम निर्माण के लिए वैज्ञानिक आधार ने शैक्षिक दृष्टिकोण का निर्माण किया है। शिक्षा द्वारा ऐसे गुणों का विकास होना चाहिए जो व्यक्ति को अपने समाज के हित के लिए कार्य करें।
इसलिए शिक्षा के उद्देश्य की उपयोगिता के लिए वैज्ञानिक आधार मूल्यवान है। क्योंकि इस माध्यम से शिक्षण विधि व्यवहारिक

P.T.O